मन चाहता है

सचिन*

मैं एक छोटा बालक हूँ,
जो निश्छल, निर्मल व सहज हूँ।

हर रिश्ता कुछ-कुछ कहता है,
जो मेरा बाल-मन सहता है।

एक अनोखी उलझन है मन में,
समझ नहीं कुछ पाता मन है।

पापा कहते-हरदम पढ़ ले,
माँ कहती है-अब तो उठ ले।

दादा-दादी टी० वी० देखें,
चाचा-चाची हरदम घूमें।

मुझसे कहते-बंद कर खेल,
बंद कर टी० वी०, अब तो पढ़ ले।

बुआ 'मौजमना' कह लाड़ जताती,
फिर मम्मी भी डाँट लगाती।

टीचर अपना काम कराती,
समय-समय पर रौब जमाती।

हर कोई अपना राग सुनाता,
मेरा मन कुछ समझ न पाता।

मन चाहता है पंख लगाकर,
आकाश को उड़कर छू लूँ।

हाथ बढ़ाकर चंदा छू लूँ,
तारा मंडल को भी ले लूँ।

परियों के संग खेलूँ-कूदूँ,
तितली के संग बगिया घूमूँ।

उछलूँ-कूदूँ, नाचूँ-गाऊँ,
दिन भर खूब धूम मचाऊँ।

दुनिया भर की सैर करूँ,
सारे जहाँ से बातें करूँ।

सबको अपना मित्र बनाऊँ,
अपने मन की बात बताऊँ।

बार-बार मन कहता मेरा,
बचपन को अच्छे से जी लूँ।

कोई मेरी चाह न रोके,
कोई मेरी राह न रोके।

जी लूँ मैं अपना बचपन,
बिन टोके, और बिन रोके।

* कक्षा – पाँच 'एफ़', केंद्रीय विद्यालय, एन. सी. ई. आर. टी. कैंपस, नयी दिल्ली-110016

सज़ा

रेखा चमोली*

एक बच्चा दीवार की तरफ़
मुँह किए खड़ा है
सकपकाया, हिचकिचाया, डरा सा!
शायद कोई कॉपी या किताब
घर छोड़ आया हो
न कर पाया हो होमवर्क!
क्या पता
जमा न हो पाई हो फ़ीस
किसी साथी से कर बैठा हो झगड़ा
शिक्षक के पढ़ाते हुए की हो कोई शरारत
कुछ पूछ बैठा हो
बगल वाले बच्चे से
या फिर
टूट-फूट गई हो उससे
कक्षा की कोई चीज़!
पता नहीं, किस कारण
कक्षा से बाहर खड़ा है
एक गुमसुम बच्चा!

* *सहायक शिक्षिका*, भटवाड़ी, उत्तरकाशी, उत्तराखंड

Cover ii-iii - New Setting.indd 3 3/25/2015 9:51:09 AM